भारतीय मीडिया में महिलाओं का प्रतिनिधित्व और चुनौतियाँः विश्लेषणात्मक अध्ययन

▫ डॉ. आशीष द्विवेदी

सारांश :- महिला सशक्तिकरण, महिला आरक्षण, लैंगिक समानता, महिला शोषण जैसे गंभीर और सरोकारी मुद्दों पर बहस, परिचर्चा और अभियान छेड़ने वाले मीडिया सेक्टर में महिलाएं आज भी बराबरी पर नहीं हैं। भारतीय मीडिया के अमूमन सभी क्षेत्रें प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, वेब, मैग्जीन में महिलाओं का औसत पुरूषों की तुलना में बेहद कम है। जो कुछ हैं भी वे इस ओहदे पर नहीं कि कोई निर्णायक भूमिका निभा सकें। मीडिया में महिलाओं को जो स्थान खबरिया चैनल्स व एफ.एम. रेडियों में मिला भी है वह उनकी वैचारिक व बौद्धिक प्रखरता से कम ग्लैमर व आकर्षण के कारण ज्यादा है। उनके ज्ञान, मेधा, समझ से कहीं ज्यादा उनका लुक, स्टाइल, वेशभूषा ज्यादा मायने रखती है। हालांकि इसमें कुछ अपवाद हो सकते हैं। प्रिंट मीडिया की हालत तो और भी चिंतनीय है। कुछेक अपवादों को छोड़ दें तो महिलाओं को भारत के तमाम नामचीन व प्रभावी अखबारों में संपादक या उसके निकटतम कोई भी पद हासिल नहीं है। अचरज की बात है कि साठ-सत्तर संस्करणों के समूहों में महिला संपादक शून्य ही हैं। भारतीय मीडिया के करीब 237 वर्षो के सफरनामे में भी महिला संपादकों, लेखकों और पत्रकारों की संख्या अनुपात के हिसाब से नगण्य ही मानी जाएगी। मीडिया समूहों के दायित्ववान मानते हैं कि हमारे यहां कोई विषमता नहीं, सबको समान अवसर हैं अगर महिलाएं ही पहल न करें तो कौन दोषी है? हिंदी पत्रकारिता या कहें समूची भारतीय पत्रकारिता के इतिहास का सिंहावलोकन किया जाए तो यह बात सटीक बैठती है कि चंद मामलों को छोड़ कभी किसी महिला ने कोई बड़ा अखबार शुरू नहीं किया न किसी मीडिया मालिक ने महिलाओं को उच्च पदों पर बैठाया। राष्ट्रीय, प्रादेशिक राजधानी और महानगरों में पिछले बीसेक वर्ष से हालात बदलने तो शुरू हुए हैं लेकिन वे संतोषजनक नहीं कहे जा सकते। विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, पत्रकारिता संस्थान शुरू होने के बाद धीरे-धीरे नई पीढ़ी की लड़कियों का इस ओर रूझान हुआ तो है पर उनमें ज्यादातर चमक-दमक के फेरे में इस प्रोफेशन में आई हैं। न्यूज चैनल्स में जरूर महिला-पुरुष अनुपात ठीक-ठाक कहा जा सकता है पर यहां भी निर्णायक पदों पर अधिकांश पुरुषों का ही एकाधिकार है।

शोध के उद्देश्य-

भारतीय मीडिया में महिलाओं की स्थिति का अध्ययन करना इसलिए प्रासंगिक और महत्वपूर्ण है ताकि इस कड़वी सच्चाई से समाज को रूबरू कराया जा सके। प्रस्तुत शोध के मुख्य उद्देश्य हैं-

1. यह बताना कि लोकतंत्र भागीदारी से चलता है और जब तक मीडिया में महिलाओं की समान भागीदारी नहीं होती वह अपनी आवाज, अन्याय, अत्याचार को समाज व सरकार के समक्ष ठीक से नहीं पहुंचा सकती।
2. यह पड़ताल करना कि भारतीय मीडिया में क्या वजहें हैं जिनके कारण महिलाओं का अनुपात इतना कम है महिलाओं से जुड़ी कई व्यवहारिक चुनौतियों की चर्चा करना।
3. मीडिया इंडस्ट्री में महिलाओं के साथ हो रहे भेदभाव, प्रताड़ना, शोषण से रूबरू कराना।
4. मीडिया मालिकों की उस अघोषित नीति को प्रकट करना जो महिलाओं को निर्णायक पदों पर पहुंचने ही नहीं देना चाहती।
5. नई पीढ़ी की महिलाओं को इस हेतु जागरूक करना

▫ लेखक इंक मीडिया ऑफ मास कम्युनिकेशन एंड आई.टी. सागर म.प्र. में निदेशक हैं।

ताकि वे इंडस्ट्री की हकीकत को समझ सकें व इस क्षेत्र में अपने कॅरियर का चुनाव करें।

6. मीडिया में महिलाओं की सुरक्षा व उनसे जुड़े संवेदनशील मुद्दों पर जनमत तैयार करना।
7. प्रेस की नियामक संस्थाओं, सरकार के समक्ष वस्तुस्थिति दर्शाना ताकि इसके लिए कोई नीति तैयार हो सके।

शोध प्रविधि-

इस विषय पर शोध पत्र तैयार करने में भारत में महिला पत्रकारों के इतिहास उनकी सक्रियता व उनके अनुपात का तुलनात्मक अध्ययन किया है। शोध के लिए आवश्यक सामग्री का चयन समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, पुस्तकों, इंटरनेट की विभिन्न साइटों के माध्यम से किया है।

शोध विधी सर्वेक्षण, विषय वस्तु का विश्लेषण, केस स्टडी, वर्गीकरण पद्धति आदि का प्रयोग किया है। शोध प्रविधि में इस बात को भी रेखांकित करने का प्रयास है कि मीडिया के प्रिंट- इलेक्ट्रॉनिक दोनों क्षेत्रों में महिलाओं का अनुपात किस तरह का है।

मीडिया में महिला पत्रकारः ऐतिहासिक पृष्ठभूमि-

भारतीय मीडिया में महिला पत्रकारों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करने पर यहां पत्रकारिता के आरंभकाल से लेकर आजादी तक महिला पत्रकारों, संपादकों की बहुत उल्लेखनीय भूमिका नहीं मिलती। जितने बड़े समाचार पत्र हुए उनमें से अमूमन सभी पुरुष संपादकों के द्वारा ही निकाले गए। इस तरह की कोई पुस्तक भी संज्ञान में नहीं आती जो पूर्णतः महिला पत्रकार या संपादकों पर केन्द्रित हो।

गूगल सर्च करने पर भी वह कुछ प्रमाणिक दस्तावेज मुहैया नहीं कराता। मुख्यधारा की पत्रकारिता में तो महिलाओं का नेतृत्व निराशा ही पैदा कराता है। यहां हम कुछ चुनिंदा पत्रकारों की चर्चा कर रहे हैं जिन्होंने भारत में महिला पत्रकारिता में उल्लेखनीय योगदान दिया।

एनी बेसेन्ट-

अखिल भारतीय कॉग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष रहीं एनी बेसेन्ट उस समय की बेहद जागरूक महिला थीं। पठन-पाठन व लेखन में भी उनकी गहरी दिलचस्पी थी। उन्होंने जनवरी 1914 में अंग्रेजी के ही साप्ताहिक पत्र कोम्मोवेअल अर्थात् लोकहित की स्थापना कर दी थी। इस तरह भारतीय महिला पत्रकारिता एक अंग्रेज महिला के प्रयासों से ही प्रारंभ हो सकी।

सरोजनी नायडू-

सरोजनी नायडू का एक पत्रकार के तौर पर भले नाम न आता हो और उनके नाम भले ही कोई अखबार के संपादक होने का उल्लेख न हो लेकिन वे उस वक्त भारतीय महिला जगत की सर्वोच्च हस्ती रहीं। उन्होंने अपने लेखन कार्य के चलते राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना ली थी। उनके अतुलनीय योगदान के चलते ही उत्कृष्ट पत्रकारिता के लिए सरोजनी नायडू अवार्ड दिया जाता है।

विद्या मुंशी-

विद्या मुंशी को भारत की पहली महिला पत्रकार माना जाता है। मुंबई में जन्मी विद्या ने अनेक समाचार पत्रों-पत्रिकाओं में सेवाएं दीं। 1952-62 के बीच वे रूसी करंजिया के चर्चित अखबार ब्लिटज की कलकत्ता संवाददाता रहीं। उन्होंने उस वक्त सरकार की नीतियों पर प्रभावी लेखन किया। खोजी पत्रकारिता के माध्यम से उन्होंने स्मगलिंग, अवैध उत्खनन के कई स्कूप उजागर किए।

विमला पाटिल-

भारतीय महिला पत्रकारों में विमला पाटिल का नाम सम्मान से लिया जाता है। संभवतः वे पहली महिला थीं जिन्होंने द टेलीग्राफ से जुड़कर लेखिका, स्तंभकार और पत्रकार के तौर पर अपना कॅरियर शुरू किया। 1959 से 1993 तक वे लगातार संपादक और महत्वपूर्ण पदों पर रहीं। उन्होंने टाइम्स ग्रुप की पत्रिका फेमिना को भी एक ब्राण्ड के तौर पर स्थापित कराया।

होमाय व्यारावाला-

होमाय व्यारवाला अर्थात् पहली भारतीय महिला फोटोग्राफर। जिन्होंने एक ओर विदेशी हाई सोसायटी मैग्जीन में अपने हुनर का कमाल दिखाया तो दूसरी ओर आमजन के जीवन से जुड़ी बातों को तस्वीर के जरिए बयान किया। उनकी कैमरे की नजर प्रथम स्वतंत्रता दिवस के अभूतपूर्व उत्साह की

साक्षी बनी। वे हमेशा पुरुष फोटोग्राफर की भीड़ में अकेली होती थीं पर कभी अपने को असहज महसूस नहीं किया।

आजादी के बाद महिला पत्रकारों का उदय-

आजादी के बाद पत्रकारिता में महिलाओं की भागीदारी हुई तो पर उसकी चाल बहुत धीमी थी। अखबारों में लैंगिक असमानता स्पष्ट तौर पर थी। महिला पत्रकारों के साथ बेहतर बर्ताव नहीं होता था। प्रेस इंस्टीट्यूट कि उपनिदेशक रहीं वरिष्ठ पत्रकार ऊषा राय पर साठ के दशक में टाइम्स ऑफ इंडिया में नौकरी के दौरान कई तरह के संकट आए। उस समय संपादकीय विभाग में एक भी महिला नहीं होती थी। प्रभा दत्त 1965 के भारत-पाक युद्ध में कवरेज करने वाली प्रथम महिला थीं जो अंग्रेजी अखबार हिंदुस्तान टाइम्स के लिए कार्य करती थीं। नौकरी को लेकर उनकी अपने संपादक से भी लड़ाई चली।

सत्तर के दशक में जब स्त्री आंदोलनों ने जोर पकड़ा तो उनकी स्थिति में काफी बदलाव आया। पारंपरिक अवरोध जो उनकी लेखनी के साथ जुड़े थे ढीले पढ़ने लगे। इस दौर में इंडिया टुडे, संडे और बिजनेस इंडिया बिना कोई लिंग भेद किए स्त्रियों को रखने को राजी हो गईं।

स्टेट्समेन दिल्ली का पहला अखबार था जिसने पचास के दशक में पूर्णकालिक महिला उप-संपादक के रूप में राज चावला को रखा था। रजिया, इस्माइल, कूमी कपूर और ऊषा राय जैसी पत्रकारों के जुड़ने से पहले भी महिला पत्रकार अखबारों में लिख रहीं थीं। पचास के दशक में ही हिंदुस्तान टाइम्स में प्रोमिला कल्हन आईं। अमिता मलिक, रामी छाबड़ा, शांता रंगचारी ने भी अपनी धाक बना ली थी। अनीस जंग, दीना वकील, बाची करकारिया, तवलीन सिंह जैसी पत्रकार एक आदर्श के तौर पर स्थापित हुईं। इंडियन एक्सप्रेस की सहायक संपादक बनी अंजली मुखर्जी इस धारा को आगे ले गईं। इंदिराधर चौधरी ने पायोनियर से होते हुए हिंदुस्तान टाइम्स में एजुकेशन सप्लिमेंट का दायित्व निभाया। इन सबके बीच एक बड़ा नाम नीरजा चौधरी का है जो आज भी महिला पत्रकारिता में एक मिसाल के तौर पर कार्य कर रही हैं। वैसे तो इस वक्त भारतीय पत्रकारिता में महिलाओं ने अपना स्थान बनाना शुरू कर दिया है लेकिन आजादी के बाद की उन चर्चित महिला पत्रकारों का जिक्र इस आलेख में किया गया है।

नीरजा चौधरी-

नीरजा चौधरी आज दिल्ली में स्थित महिलाओं के प्रेस क्लब से जुड़ी हैं। उन्होंने 60 के दशक में मुंबई के हिम्मत अखबार से अपनी यात्रा शुरू की। वे स्वयं को एक राजनैतिक पत्रकार के तौर पर स्थापित करने में सफल रहीं और आज भी सक्रिय हैं। वे हिंदुस्तान टाइम्स में 1972 से निरंतर लिख रहीं हैं। देश-विदेश की पत्र-पत्रिकाओं में उनके लेख छपते हैं।

मृणाल पाण्डे-

हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में मृणाल पाण्डे एक समय ब्राण्ड के तौर पर उभरीं। उन्होनें उस वक्त संपादक की कुर्सी संभाली जब इस पेशे में महिलाओं का औसत और भी नगण्य था। वे उस वक्त के सबसे प्रतिष्ठित समाचार पत्र साप्ताहिक हिंदुस्तान से लेकर दैनिक हिंदुस्तान के संपादकीय दायित्व को पूरी निष्ठा के साथ निभातीं रहीं। इसके बाद भी उनका सफर थमा नहीं बल्कि पत्रकारिता के क्षेत्र में कई कीर्तिमान रचे । वे 2008 में पीटीआई बोर्ड की सदस्य बनीं। बाद में वो प्रसार भारती की चेयरमेन भी रहीं।

चित्रा सुब्रमण्यम-

भारतीय महिला पत्रकारिता में चित्रा सुब्रमण्यम पुरुष प्रधान इस पेशे में प्रभावशाली नाम है। जिन्होंने अपनी खोजी पत्रकारिता से पत्रकारिता में महिला प्रभुत्व को स्थापित कर दिया। बोफोर्स काण्ड को उजागर करने वाली चित्रा सुब्रमण्यम ने जनसंचार में डिग्री-डिप्लोमा हासिल कर इंडिया टुडे ज्वाइन की। द हिन्दू, इंडियन एक्सप्रेस, स्टेट्समेन से जुड़कर उन्होंने बोफोर्स काण्ड उजागर किया। यह तोपों की खरीदी में अवैध तरीके से भुगतान से जुड़ा मामला था। भारतीय राजनीति का यह चर्चित स्कैण्डल रहा।

मधु त्रेहान-

मधु त्रेहान भारत की प्रख्यात महिला पत्रकार हैं जिन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय से पत्रकारिता में मास्टर डिग्री लेने के बाद 1975 में इंडिया टुडे के अंग्रेजी संस्करण की नींव रखीं। वे इसकी संस्थापक संपादक रहीं। 1986 में उन्होंने न्यूजट्रेक नाम की पहली वीडियों मैग्जीन की शुरूआत कर खोजी पत्रकारिता के क्षेत्र में तहलका मचा दिया। वे आज भी

आउटलुक, हिंदुस्तान टाइम्स सहित अन्य स्थानों पर सक्रिय लेखन कर रहीं हैं।

प्रिंट मीडिया में महिला अनुपात-

प्रिंट मीडिया में महिलाओं का अनुपात बेहद चौंकाने वाला तो है ही नैराश्य भी पैदा करता है। आजादी के सात दशक बाद भी अमूमन सभी महत्वपूर्ण पदों पर महिलाएं नदारद हैं। हिंदी प्रिंट मीडिया के हालात तो और भी भयावह हैं। पूरी पड़ताल में यह तथ्य उभरकर आया कि आठ प्रमुख पत्रों के कुल 185 संस्करणों में महज 2 महिलाएं ही संपादक के पद पर हैं। वह भी केवल दैनिक जागरण में। भास्कर के कुल 65 संस्करणों में एक भी महिला संपादक का न होना बेहद चुभता सवाल है। इधर सभी राष्ट्रीय व प्रादेशिक अखबार के हाल जुदा नहीं हैं। हिंदुस्तान, नवभारत टाइम्स, अमर उजाला की तस्वीर भी बेहद असंतोषजनक है। हालांकि अंग्रेजी मीडिया की स्थिति हिंदी के मुकाबले बेहतर कही जा सकती है। तीन प्रमुख अखबारों का अध्ययन करने पर यह बात उभरकर आती है कि अंग्रेजी मीडिया महिलाओं को पर्याप्त प्रतिनिधित्व दे रहा है। इसका कारण सेवा शर्तें, वातावरण, सुरक्षा भी हो सकती हैं कुल मिलाकर हालात यहां संतोषजनक है। हिंदी-अंग्रेजी पत्रिकाओं में इंडिया टुडे का अंग्रेजी संस्करण छोड़ दिया जाए तो सभी-जगह पुरुष ही संपादक के पदों पर हैं।

समाचार पत्र	संस्करण	महिला संपादक	प्रतिशत
दैनिक भास्कर	65	0	0 प्रतिशत
हिंदुस्तान	20	0	0 प्रतिशत
अमर उजाला	19	0	0 प्रतिशत
दैनिक जागरण	27	2	7.4 प्रतिशत
राजस्थान पत्रिका	37	0	0 प्रतिशत
नवभारत टाइम्स	7	0	0 प्रतिशत
लोकमत समाचार	3	0	0 प्रतिशत
नईदुनिया	7	0	0 प्रतिशत
कुल – संस्करण	185	2	

अंग्रेजी प्रिंट मीडिया में महिला प्रतिनिधित्व

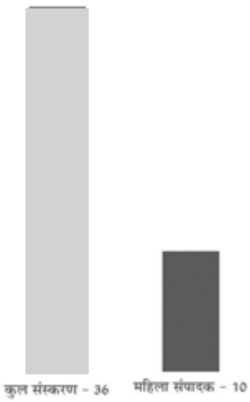

समाचार पत्र	संस्करण	महिला संपादक	प्रतिशत
टाइम्स ऑफ इंडिया	13	5	38.46 प्रतिशत
हिंदुस्तान टाइम्स	7	2	28.57 प्रतिशत
इंडियन एक्सप्रेस	9	3	33.33 प्रतिशत
द टेलीग्राफ	8	0	0 प्रतिशत

हिंदी प्रिंट मीडिया में महिला प्रतिनिधित्व

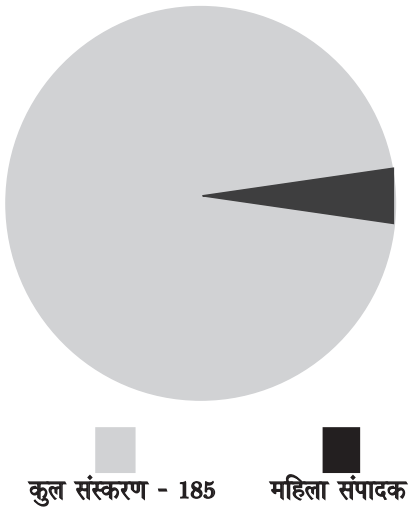

हिंदी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में महिला प्रतिनिधित्व

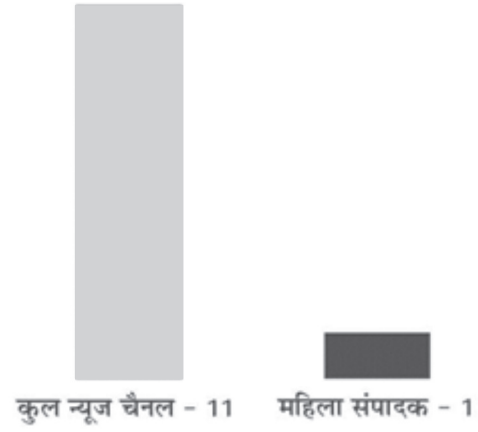

चैनल	मुख्य संपादक / संपादक
आज तक	अरूण पुरी
जी न्यूज	सुधीर चौधरी
एन.डी.टी.वी.	प्रणव राय / रवीश कुमार
टी.वी.–18	प्रबल प्रताप सिंह
लोकसभा टीवी	आशीष जोशी
राज्यसभा टीवी	राजेश बादल
समय	मनोज मनु
न्यूज–24	अनुराधा प्रसाद
इंडिया न्यूज	दीपक चौरसिया
इंडिया टीवी	रजत शर्मा
एबीपी न्यूज	मिलिंद्र खांडेकर

प्रमुख समाचार पत्रिकाओं में महिला प्रतिनिधित्व

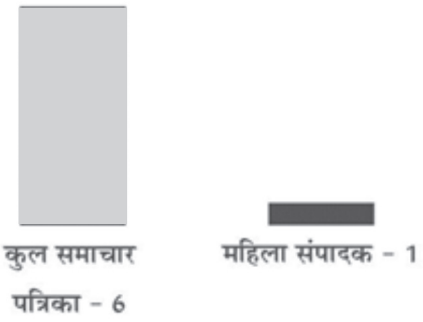

आऊटलुक (मासिक)	हरवीर सिंह
इंडिया टुडे (हिंदी)	अंशुमान तिवारी
तहलका (हिंदी)	उपेन्द्र राय
द वीक (अंग्रेजी)	फिलिप मैथ्यू
इंडिया टुडे (अंग्रेजी)	शिवानी गुप्ता
आऊटलुक (अंग्रेजी)	राजेश रामचंदन

स्त्रोतः समस्त जानकारी इंटरनेट के ई संस्करण की प्रिंट लाइन के आधार पर।

अंग्रेजी न्यूज चैनल्स में महिला प्रतिनिधित्व

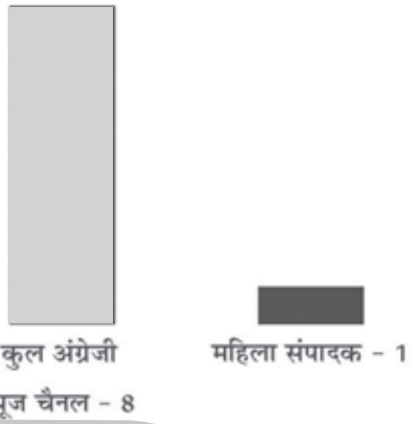

एन.डी.टी.वी.	मानिका रैकवार / अहिरवार
टाइम्स नाऊ	राहल शिवशंकर
इंडिया टुडे	अरूण पुरी
सीएनएन न्यूज–18	राहल जोशी
सीएनवीसी टीवी–18	शिरीन बेन
न्यूज एक्स	कार्तिकेय शर्मा
राज्यसभा टीवी	अनिल. जी. नायर
लोकसभा टीवी	सुमित सिंह

स्त्रोतः समस्त जानकारी चैनल्स की बेवसाइट के आधार पर।

महिला पत्रकार वर्तमान दौर में-

इस समय मीडिया में महिलाओं का दखल बढ़ा तो है पर उसकी ज्यादातर पहुंच इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के चैनल्स पर ही है। प्रिंट मीडिया में हालात अभी भी चिंताजनक हैं। मालिनी पार्थसारथी को हिंदू ने अपना मुख्य संपादक बनाया था, वहीं आरती जेरथ, टाइम्स ऑफ इंडिया में महत्वपूर्ण पदों पर रहीं। कादम्बरी मुरली स्पोर्टस इलेस्ट्रेट में खेल संपादक के तौर पर तो शोभा चौधरी तहलका की प्रबंध संपादक के दायित्व को संभालती। शोभा डे, वर्तिका नंदा, शारदा उगरा, सागरिका घोष, भाषा सिंह, क्षिप्रा माथुर, स्मिता मिश्र, रूमनी घोष, उपमिता वाजपेयी जैसी महिलाएं मोर्चे पर डटी हैं। वहीं अंग्रेजी की प्रतिष्ठित पत्रिका डाउन टू अर्थ की संपादक सुनीता नारायण का नाम भी सम्मानपूर्वक लिया जाता है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में दूरदर्शन की नीलम शर्मा, निधि कुलपति, बरखा दत्त, रिचा अनिरूद्ध, मीमांसा मलिक, अनुराधा प्रसाद, श्वेता सिंह, अंजना ओम कश्यप, नेहा पंत, कादम्बनी शर्मा सहित बीसियों नाम हैं जिन्होंने अपनी अलग छाप छोड़ी है।

महिला पत्रकारों की चुनौतियांः कुछ प्रकरण-

मीडिया इंडस्ट्री में महिला पत्रकारों के समक्ष कई तरह की चुनौतियां व संकट आते हैं। मीडिया के इस पुरुष प्रधान पेशे में महिलाओं के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार होता रहा। महिलाओं की प्रताड़ना, शोषण, अत्याचार के कई प्रकरण हैं जिनकी वजह से भी महिलाएं इस जोखिम भरे पेशे में आने से कतराती हैं। आमतौर पर रात्रि की पाली में कार्य करने की असमर्थता भी उनके कॅरियर में रोड़े अटकाती है। इधर घर-गृहस्थी परिवार, सुरक्षा जैसी भी कई चुनौतियां हैं। इस

चरण में उन सभी प्रकरणों को उठाने की कोशिश है।

प्रकरण- 1.

टाइम्स ऑफ इंडिया में साठ के दशक में काम करने वाली वरिष्ठ पत्रकार ऊषा राय का प्रकरण अखबारी मानसिकता को दर्शाता है। उस वक्त संपादकीय विभाग में मात्र वही महिला थीं। वे आठ वर्ष तक लगातार काम करने वाली प्रथम महिला पत्रकार रहीं। जब उनका पहला बच्चा गर्भ में था तो उन्होंने प्रसवकालीन अवकाश की मांग रखी। प्रबंधन की ओर से कहा गया कि हमारे यहां इस तरह का कोई प्रावधान नहीं है। 1968 में मूल्यवृद्धि के विरोध में सुपर बाजार के सामने एक प्रदर्शन किया जा रहा था, जहां आठ माह की गर्भवती ऊषा राय को रिपोर्टिंग हेतु भेजा गया। प्रदर्शनकारियों के हिंसक हो जाने के कारण आपाधापी फैल गयी और पुलिस को आंसू गैस छोड़नी पड़ी। पुलिस उन्हें सुरक्षित एक स्थान पर ले गई। तभी संपादक ने कह दिया कि महिलाओं के लिए अखबार में स्थान नहीं।

प्रकरणः 2.

वरिष्ठ पत्रकार बाची काकरिया जब नौकरी मांगने स्टेट्समेन गईं तो यह कहकर उन्हें मना कर दिया गया कि संस्थान में महिला टायलेट नहीं है। आज की महिला पत्रकारों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि नौकरी की एक वजह टायलेट भी हो सकती है।

प्रकरणः 3.

साठ के दशक में जब नीरजा चौधरी हिम्मत से जुड़ी तब स्टेट्समेन के तत्कालीन संपादक कुलदीप नैयर ने एक समारोह में कहा था कि वह महिलाओं का प्रेफर नहीं करना चाहते क्योंकि प्रशिक्षित होने के बाद शादी करके चली जाती हैं उनके लिए नौकरी वेटिंग रूम की तरह होती है।

प्रकरणः 4.

आप हिंसा किसे कहेंगे? क्या इसके लिए महिला का निर्वस्त्र सड़क पर फेका जाना जरूरी है?उसके अंग और आंते नष्ट होना जरूरी है?क्या हम हत्या को दो भागों में बांटते हैं?सहन करने योग्य और सहन से परे? तो दुष्कर्म को अलग-अलग ग्रेड में क्यों रखा है?

- तहलका की प्रबंध संपादक, शोभा चौधरी, दिल्ली

दुष्कर्म के बाद लिखे कॉलम में

आप तरुण जी को रेपिस्ट नहीं कह सकते। उन्हे अपनी बात रखने का हक है। त्यागपत्र देकर उन्होंने हाई स्टेंडर्ड स्थापित किया हैं।

शोभा चौधरी

इस घटना के बाद

तहलका के पूर्व संपादक तरुण तेजपाल पर अपने ही संस्थान की एक महिला पत्रकार से यौन उत्पीड़न का केस चल रहा है। 7 नवम्बर 2014 के इस घटनाक्रम में नशे की हालत में तेजपाल ने अपनी महिला सहकर्मी के साथ बलात्कार, यौन उत्पीड़न और शील भंग की कोशिश की। इस मामले में तेजपाल फिलहाल जेल में हैं।

प्रकरण- 5.

मुंबई में 23 अगस्त 2013 को पुरानी महालक्ष्मी मिल के पास सामूहिक दुष्कर्म का बेहद सनसनीखेज प्रकरण संज्ञान में आया था। 22 वर्षीय यह फोटोग्राफर एक लाटफस्टाइल पर केन्द्रित पत्रिका के लिए फोटोग्राफी करती थी। यह महिला पत्रकार पर हुआ अब तक का सबसे वीभत्स मामला है। जो मुंबई जैसे महानगर में महिला पत्रकारों के लिए खतरे की घंटी है।

प्रकरणः 6

इंडिया टी.वी. की एंकर तनु शर्मा ने 22 जून 2014 को चैनल दफ्तर के बाहर जहर खाकर आत्महत्या की कोशिश की। वक्त रहते इलाज के चलते उसकी जान तो बच गई पर उसने जो बयान पुलिस को दिया उससे एक बार फिर मीडिया बिरादरी शर्मसार हो गई। तनु ने कहा इंडिया टी.वी. की एक वरिष्ठ सहयोगी ने उन्हे राजनेताओं और कॉरपोरेट जगत के बड़े लोगों को मिलने और गलत काम करने को बार-बार कहा। तनु के मुताबिक, इन अश्लील प्रस्तावों के लिए मना करने के कारण मुझे परेशान किया जाने लगा, यह बात भी गौर करने लायक है कि तनु ने जिन दो वरिष्ठ कर्मियों के नाम लिए उनमें एक महिला भी है।

अंततः तंग आकर तनु ने आत्महत्या की कोशिश

की। हालांकि चैनल ने तनु के तमाम आरोपों को सिरे से खारिज किया है। यह महिला पत्रकारों की प्रताड़ना की एक बानगी भर है।

प्रकरण-7

नई दिल्ली में 6 अप्रैल 2017 को महिला पत्रकार अर्पणा कालरा पर हमला हो गया। वे पार्क में सैर को निकलीं थी तभी लौटते वक्त कुछ अज्ञात लोगों ने उन पर लोहे की राड व अन्य हथियारों से हमला कर दिया। हमले की वजह साफ नहीं हुई लेकिन एक महिला पत्रकार पर हुआ हमला उनकी सुरक्षा पर सवाल खड़े करता है।

मीडिया संस्थानों के जिम्मेदारों का पक्ष-

हमारे यहां महिला संपादक भले नहीं हैं लेकिन रिर्पोटर तो हैं। हिन्दी अखबार आम तौर पर महानगरों से कम ही निकलते हैं। कस्बों और छोटे शहरों का उस तरह का माहौल नहीं रहता है। जिस कारण महिलाएं इस क्षेत्र में कम ही आतीं हैं। लेकिन अंग्रेजी अखबार मेट्रो शहरों से अपेक्षाकृत ज्यादा निकलते हैं । जिससे महिलाओं को ज्यादा सुविधा व सुरक्षा रहती है। सबसे बड़ी परेशानी यही है कि कई यूनिटों में महिला पत्रकार ही नहीं हैं। जब पत्रकार ही नहीं हैं तो संपादक कहां से होगीं। संपादक को लेकर लैगिंक भेदभाव हमारे यहां नहीं है। हमारे यहां न जाति, न लिंग, न उम्र का कोई बंधन है। जिसमें प्रतिभा है, वो संपादक बन सकता है। महिलाओं का प्रिंट मीडिया की तरफ रूझान ही कम है। भास्कर की तो पॉलिसी ही यही है कि, हर यूनिट में एक महिला पत्रकार तो होना ही चाहिए, पर वो आतीं हीं नहीं।

शिव कुमार विवेक, नेशनल सेटेलाइट एडीटर, दैनिक भास्कर, भोपाल

हमारे यहां महिला रिपोर्टर बहुत हैं, लेकिन इस फील्ड में पूरी तरह से समर्पित होकर महिलाएं कम ही आतीं हैं। भास्कर में महिलाओं के लिए कोई बंदिशें नहीं हैं। बस प्रतिभाओं के आने की कमी है। महिलाओं के इस क्षेत्र में आने को लेकर हमारे एम.डी. सुधीर अग्रवाल का बहुत सकारात्मक रवैया है। मूल वजह महिलाओं का रूझान न होना है। प्रिंट मीडिया संवेदनाओं वाला मीडिया है और यदि संवेदना की बात करें तो इस मामले में पुरुषों से ज्यादा महिलाओं में संवेदना होती है।

मधु आचार्य, एडीटर, दैनिक भास्कर, बीकानेर

जेंडर देख कर कोई संपादक बनाया जाए, ऐसी कोई पॉलिसी हमारे अखबार में नहीं है। संपादक ही नहीं बल्कि महिला पत्रकारों की ही कमी है। जब पत्रकार ही नहीं होगीं तो संपादक कहां से बनेगीं। महिलायें आती भी हैं तो किन्ही कारणों से उन्हें पत्रकारिता छोड़नी पड़ती है। विवाह के बाद कहीं न कहीं महिलाओं की प्राथमिकता परिवार होता है।

आनंद पाण्डेय, स्टेट एडीटर, नईदुनिया, इंदौर

महिलाओं के इस क्षेत्र में न आने की कहीं न कहीं एक बड़ी वजह सुरक्षा को लेकर है। दूसरी वजह परिवार का मसला और समाज की सोच भी है लेकिन अब समय बदला है, सोच बदली है।

क्षिप्रा माथुर, केम्पेन एडीटर, राजस्थान पत्रिका, जयपुर

निष्कर्ष-

इंटरनेशनल न्यूज सेफ्टी इंस्टीट्यूट और इंटरनेशनल वीमन्स मीडिया फाउडेंशन ने दुनियाभर की 875 महिला पत्रकारों के साथ सर्वे किया। सर्वे के मुताबिक करीब दो तिहाई महिला मीडियाकर्मियों ने काम के सिलसिले में धमकी और बदसलूकी झेली है। ज्यादातर मामलों में जिम्मेदार पुरुष सहकर्मी थे। वरिष्ठ पत्रकार पामेला फिलीपोज के मुताबिक भारत में ये खतरा कहीं ज्यादा है।

इन तमाम घटनाओं, तथ्यों, दस्तावेजों, आंकड़ो के जरिए दो-तीन बातें उभरकर आती हैं। पहली तो यह कि पत्रकारिता का पेशा महिलाओं के लिए कई गंभीर चुनौतियां लेकर आता है। महिला पत्रकारों को संस्थान के अंदर व रिर्पोटिंग के दौरान बाहर दोहरी चुनौतियां हैं। एक असुरक्षा का भाव फील्ड के दौरान है तो उससे कहीं ज्यादा संस्थान के सहकर्मियों व वरिष्ठजनों से। एक और चिंता की बात यह है कि कई प्रकरणों में महिला कर्मी ही महिला पत्रकार के प्रति दुराभाव का रवैया रखतीं हैं। कई प्रकरणों में तो महिला ही महिला की दुश्मन नजर आती है।

दूसरी समस्या महिलाओं के मीडिया में प्रतिनिधित्व

को लेकर है। आंकड़े इस बात की चुगली करते हैं कि आजादी के सत्तर वर्ष बाद भी इस पेशे में पुरुष मानसिकता हावी है। समूचे मीडिया जगत के निर्णायक पदों पर पुरुष ही स्थापित हैं। वे महिलाओं के लिए मुफीद माहौल बनने ही नहीं देते। अगर शादी-विवाह के बाद कोई महिला हिम्मत करे भी तो उस पर कटाक्ष शुरू हो जाते हैं। कहीं घर से सपोर्ट नहीं मिलता तो कहीं ऑफिस से। ऐसे में मन मानकर उसे अपने सपनों को अधूरा छोड़ना पड़ता है। हांलाकि महानगरों में हालात आहिस्ता-आहिस्ता बदल रहे हैं पर कस्बाई शहरों में स्थिति चिंतनीय है। महिलाओं का अगर मीडिया में कहीं प्रभाव दिख रहा है तो वह क्षेत्र इलेक्ट्रानिक मीडिया का है लेकिन वहां भी चैनल्स की मजबूरी है ताकि उनके चैनल की दर्शनीयता बनी रहे। निर्णायक और नीतिगत पदों पर महिला वहां भी लगभग अनुपस्थित हैं। मानसिकता में बदलाव लाए बगैर महिलाओं को इस क्षेत्र में बराबरी का दर्जा मिल पाना संभव नजर नहीं आता।

संदर्भ-सूची

- शुक्ल सुधाः महिला पत्रकारिता, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
- महिला पत्रकारों की संघर्ष गाथाः माधवी श्री
- दैनिक भास्कर-23 नवम्बर 2014, कल्पेश याज्ञनिक लेख
- सहारा समयः महिलाओं का मीडिया मोर्चाः सुमन वाजपेयी- अप्रैल 2003
- पत्रकारिता शिक्षण और प्रशिक्षणः अरविंद मोहन
- टाइम्स ऑफ इंडिया- 23 अगस्त 2013
- बी.बी.सी. हिंदी.कॉम- 3 जुलाई 14
- द हिन्दू रिपोर्ट- 30 दिसम्बर 2013- भामा देवी रवि
- Women Journalist in india: swimming Against The tide: R. Akhileshwari
- दैनिक भास्कर, नईदुनिया, पत्रिका, टाइम्स ऑफ इंडिया के ई-संस्करण

❑❑❑❑❑